Q:→ सकारात्मक राष्ट्र के निर्माण में बढ़ती कामुकता एक बड़ा मुद्दा है।

उत्तर:- सकारात्मक राष्ट्र के लिए युवाओं के बिच बढ़ती कामुकता का एक बड़ा मुद्दा बनना यौन शिक्षा का बचपन से ही अभाव होता है क्योंकी यौन रहस्य और उनके प्रति जिज्ञासा एक स्वभाविक प्रक्रिया है मनुष्य की मूल प्रवृति में भी कार्य भी एक है क्योंकी हमारी रूढ़िवादी समाज इस शिक्षा को सकारात्मक रूप में नहीं लेते है जिससे इसका प्रभाव राष्ट्र पर पड़ रहा है और इसका परिणाम यह होता है की खुलेआम दुर्व्यवहार, छेड़खानी, Rape जैसे समस्यायें उत्पन्न हो रही है क्योंकी यौन शिक्षा को हम निषेद की वस्तु मानकर चोरी-छीपे इसके विषय में अवास्तविक तथा अपूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेते है जिससे आगे चलकर उसमें शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास पर गलत प्रभाव पड़ता है जोकी राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध होता है इस प्रकार हम शुरु से ही बच्चों को यौन शिक्षा से अवगत करा दें तो घर से बाहर तक कोई समस्या नहीं होगा और एक स्वस्थ भारत का निर्माण होगा जैसे की —

→ यौन शिक्षा स्वस्थ लैंगिक विकास का दृष्टिकोण करती है।

→ शारीरिक संरचना और व्यवहार का ज्ञान प्रदान करती है।

Page. 1

Scanned with CamScanner

→ किशोर आयु में होने वाले शारीरिक समस्यों से राहत प्रदान करती है।

Page-2

इस तरह युवाओं में बढ़ती हुई कामुकता का आकर्षण कर रह सकती है और वे एक गलत निर्माण कर सकती है अतः इस मुद्दे को हम तीन क्षेत्रों में और स्तरों में अगर बांटना जा दे तो इसका समाधान हो सकता है-

(i) घर
(ii) विद्यालय
(iii) समाज / बाहर

* (i) घर :—

यहाँ घर का मतलब परिवार से है क्योंकि बच्चों का जन्म परिवार में होता है और उसका पालन-पोषण पारिवारिक वातावरण में होता है जिसका विशेष प्रभाव शारीरिक, मानसिक स्तर पर विशेष रूप से पड़ता है इसलिए सकारात्मक लैंगिक दृष्टिकोण के विकास में परिवार की ही महत्वपूर्ण भूमिका चाहिए —

→ परिवार को विशेष सूचक शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए

→ परिवार के बालक और बालिका में भेद-भाव पूर्ण व्यवहार ना करके समान पालन-पोषण तथा शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Page 3

→ जैसा की हम जानते है की परिवार मे लड़को को श्रेष्ठ तथा लड़की को कमजोर नही मानना चाहिए। साथ ही लैंगिक भाव बराबर रखनी चाहिए। परिवार मे लड़कियों को बचपन से ही माता-पिता के द्वारा उन्हें यौन शिक्षा के बारे मे बताना चाहिए। साथ ही महिलाओं को गैर नहीं बल्की माँ, बहन बेटी है जिनके बिना समाज अधुरी है और यह हमारी सृष्टी की जननी है मानना चाहिए।

→ यौन शिक्षा पर नियंत्रण रखना चाहिए।

→ एक-दुसरे के प्रति आकर्षण को उत्पन्न होने से उनके प्रति जागरूकता पैदा करवाना चाहिए।

→ संक्रमक (sexually Transmitted Disease) से अवगत करना।

→ यौन शिक्षा के पुर्ती के समय और उम्र को जानना चाहिए।

→ शिक्षा के द्वारा खुलकर यौन शिक्षा के बारे मे बताना चाहिए।

→ यौन शिक्षा को ग्रहण करके परिवार सकारात्मक

लैंगिक रूढ़ियों के विकास का कारण?

Page-4

⇒ अतः परिवार में बालकों में श्रेष्ठता का भाव बालिकाओं की अपेक्षा नहीं भरनी चाहिए, बल्कि समानता लैंगिक भाव उत्पन्न करनी चाहिए जिससे समाज में बालिकाओं के लिए सुरक्षा का वातावरण बनी चाहिए।

→ परिवार में बालक और बालिकाओं के प्रति शिक्षा तथा लिंगीय मुद्दों पर बात चीत होना चाहिए ताकि सकारात्मक लैंगिक रूढ़ियों को उत्पन्न किया जा सके।

2) ii) बाहरी विद्यालय / समाज / बाहर :-
लैंगिक रूढ़ियों के नकारात्मक होने का परिणाम हमारे समाज में बेटियाँ और उनके रहन-सहन ऊपर रहे हैं

Page 5

रहें तक आये दिन बलात्कार, छेड़खानी, ईवटीज़िंग की घटनायें होती रहती हैं, क्योंकि हमारे समाज में यौन विषयों पर बात करना अपराध समझा जाता है जिससे युवा पीढ़ियाँ गलत धारणाओं की शिकार हो जाती है और इससे अपनी वे अपने अंदर के कुण्ठा निकालने के लिए गलत इस्तेमाल करते हैं जो मानवता को शर्मसार होती हैं। साथ-2 अक्सर अभिभावक भी अंधकार गहर से भागा हैं घर तो सत्य है कि बेटियाँ घर में भी सुरक्षित नहीं है फिर भी घर की अपेक्षा हमारे सामाजिक स्थल अर्थात घर से बाहर वे ज्यादा असुरक्षित हैं घर में यदि माता-पिता बेटी को सुरक्षा प्रदान कर सकते है तो बाहर इसकी हमारे समाज क्यों नहीं? लेकिन इसका उत्तरदायित्व कोई भी लेना नहीं चाहता है। समाज का क्षेत्र और शक्ति परिवार से कहीं अधिक व्यापक है अतः युवाओं में सकारात्मक लैंगिक झुकाव के निम्न प्रकार से होनी चाहिए—

→ समाज को पुस्तकालयों की स्थापना द्वारा लोगों को जागरूक करना चाहिए।

→ सामाजिक क्रियाकलापों में बालक व बालिकाओं को समान रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।

→ यौन शिक्षा के प्रति उदार तथा व्यापक दृष्टिकोण का होना।

→ सामाजिक सुरक्षा का वातावरण तैयार करना।

→ अशुद्ध शब्दावली तथा व्यवहार के प्रति हेय भाव रख

→ समाज को युवाओं के सकारात्मक लैंगिक व्यवहार के लिए समय-समय पर इससे सम्बंधित आयोजनों को आयोजित करना चाहिए।

→ किसी भी प्रकार लैंगिक दुर्व्यवहार दिखने पर समाज को आगे आना चाहिए।

इस प्रकार विद्यालय घर और बाहर इन तीनों के बिना आज किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है और लैंगिक भेदभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है अतः विद्यालय घर और बाहरी वातावरण को इस प्रकार बनाये जाना चाहिए कि बालक और बालिकाओं में संवाद कायम हो सके जिससे एक गुणात्मक वातावरण का सृजन होगा और सकारात्मक लैंगिक विकास को गति प्रदान होगी।